बाबू गुलाबराय की समीक्षा-दृष्टि

डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

वर्तमान साहित्य 2002 के आलोचना विशेषांक में हिंदी आलोचना के नवरत्नों में बाबू गुलाबराय का नाम नहीं था। आज के समीक्षकों ने इनका नाम खारिज कर दिया है। वस्तुतः इनकी युगान्तकारी प्रतिभा को सही ढंग से परखा नहीं गया। बाबू गुलाबराय ने साहित्यकार, दार्शनिक, आलोचक, संपादक आदि विविध रूपों में हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इन्होंने हिंदी, संस्कृत, फारसी, उर्दू भाषा का गहन अध्ययन किया। गुलाबराय की सरलता, सादगी और नैतिकता उनके साहित्य में परिलक्षित होती है। हार्दिक श्रद्धांजलि के अवसर पर महादेवी वर्मा ने कहा - ''आदरणीय भाई गुलाबराय जी हिंदी के उन साधकपुत्रों में से थे, जिनके जीवन और साहित्य में कोई अन्तर नहीं रहा। तप उनका सम्बल और सत्य स्वभाव बन गया था। उन जैसे निष्ठावान, सरल और जागरुक साहित्यकार विरले ही मिलेंगे।''

यह सही है कि हिंदी समीक्षा के क्षेत्र में इन्होंने कोई युगान्तकारी परिवर्तन नहीं किया, लेकिन इनकी प्रतिभा ने तत्कालीन युग को प्रभावित किया। दरअसल आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी समीक्षा की चादर को लोकमंगल के धागे से इतने तन-मन से बुना कि अन्य चादरें हल्की पड़ गईं। गुलाबराय ने साहित्य के समतल भूमि पर कार्य करते हुए भारतीय और पाश्चात्य, नवीन और प्राचीन, नीतिवादी और कलावादी, वास्तविकता और कल्पना आदि से संबंधित मतों में समन्वय स्थापित किया इन्होंने ज्ञान का दोहन तो जरुर किया लेकिन उसे व्यावहारिक स्वरूप नहीं दे पाए। शुक्ल जी ने समीक्षा के कुछ ऐसे मानदण्ड निर्धारित किए कि उनका अतिक्रम करना मुश्किल था। मध्ययुगीन कवियों में उन्होंने जायसी, सूर, तुलसी के काव्य-सौंदर्य की ऐसी त्रिवेणी प्रवाहित की कि उसमें कालान्तर के समीक्षक गोते लगाने लगे। समीक्षा के इसी परिदृश्य में गुलाबराय का व्यक्तित्व उभर रहा था किंतु शुक्ल की समीक्षा के समक्ष विशालरूप धारण नहीं कर सका। कालान्तर में गुलाबराय समीक्षा को साहित्य के छात्रों से लेकर जन सामान्य तक ले गए जो कि युग की अवश्यकता भी थी। इनकी समीक्षा अपनी संपूर्णता में युग को प्रभावित करने वाली जनोन्मुखी प्रवृत्ति का परिचय देती है। ये दर्शन और तर्कशास्त्र के अध्येता थे। जीवन और साहित्य का गहन अध्ययन होने के बाद भी ये साहित्य जगत में समीक्षा की जड़ें नहीं जमा सके। डॉ. श्यामसुंदर दुबे का मत है - ''उनकी व्यावहारिक आलोचना समन्वय के सौंदर्य में अटक कर भीतरी जांच पड़ताल के मौलिक सरंजामों से मेल मुलाकात नहीं कर पाती।

दरअसल वे कृति को उसकी संपूर्णता में प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील रहे । उनकी दार्शनिक वृत्ति उनकी आलोचना में कहीं-कहीं नियामक बन जाती है । अतः व्यवहार में भी वे स्वछंदतावादी पद्धति को अपनाते-अपनाते रह जाते हैं ।'' (आजकल-मई-1988)

1955 में प्रकाशित इनकी हिंदी काव्य-विमर्श पुस्तक में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के छायावाद तक के प्रमुख कवियों के काव्य-सौंदर्य की समीक्षा की गई है । इसके अंतर्गत कवि एवं ग्रन्थ परिचय, विचारधारा, काव्य-सौंदर्य, भाषा और अंत में सम्बंधित कवियों के काव्य वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला गया है । कवियों के काव्य-सौंदर्य के विवेचन और विश्लेषण की जो धार शुक्ल जी की समीक्षा में विद्यमान है, वह गुलाबराय की समीक्षा-दृष्टि में देखने को नहीं मिलती ।

''सूर की गोपियों ने दुःख में अपना सहज चापल्य नहीं छोड़ा था किंतु इन चापल्य की लहरों के भीतर विरह का बड़वानल धधक रहा था । इस विरह ने ही उनके संयोग के गाम्भीर्य को आलोकित किया । गोपियों का हास-विलास केवल जवानी की उठती हुई तरंग न थी जो सहज में विलीन हो जाती ।'' (हिंदी-काव्य-विमर्श-पृ.105)

वियोग की दशा में प्रेम की उदात्तभावना को शुक्ल जी इस रूप में व्यक्त करते हैं - ''आत्मोत्सर्ग की पराकाष्ठा वहाँ समझनी चाहिए जहाँ प्रेमी निराश होकर प्रिय के दर्शन का आग्रह भी छोड़ देता है । इस अवस्था में वह अपने लिए प्रिय से कुछ चाहना छोड़ देता है और उसका प्रेम इस अविचल कामना के रूप में आ जाता है कि प्रिय चाहे जहाँ रहे, सुख से रहे, उसका बाल भी बांका न हो ।''

जहं-जहं रहौ, राज करौ, तहं तहं लेहु कोटि सिरभार ।
यह असीस हम देतिं सूर-सुनु न्हात खसैजनिबार॥

गुलाबराय काव्य समीक्षा के अंतर्गत समन्वयवाद पर विशेष बल देते हैं । कामायनी के संदर्भ में उनका मानना हैं -

''समन्वयवाद भारतीय संस्कृति और साहित्य की मुख्य विशेषता है । यही कामायनी का मूल स्वर है । गोस्वामी जी ने भी ज्ञान और शक्ति तथा शैव मत और वैष्णव मत का समन्वय किया है । कामायनी में ज्ञान, इच्छा और क्रिया का समन्वय एक दूसरे रूप से भी हुआ है ।'' (हिंदी-काव्य-विमर्श-पृ. 234)

इन्होंने समन्वयवाद को समग्रता का प्रतीक मानते हुए लिखा है- ''हमारे प्राचीन साहित्य में धर्म के आध्यात्मिक मूल्यों और काम के सौंदर्य संबंधी मूल्यों (एस्थेटिक-वेल्यूज) का समन्वय जीवन का परम लक्ष्य माना गया है । साहित्य का कार्य समन्वय और एकत्रीकरण है । विभाजन नहीं ।'' (आजकल मई-1988)

गुलाबराय की समीक्षा निरंतर नैतिक चेतना से स्पंदित रही है जो कि इन्हें संस्कार रूप में बचपन से मिली थी । नैतिकतावादी दृष्टि के कारण इन्होंने दोष पर कम गुण पर अधिक विचार किया है । सामाजिक सरोकारों के प्रति सदैव जागरुक रहे लेकिन समीक्षा दृष्टि में उसे व्यावहारिक स्वरूप प्रदान नहीं कर सके ।

काव्य स्वरूपों, प्रकारों और प्रवृत्तियों की चर्चा परंपरागत एवं नवीन दृष्टि से की गई है जिसमें संक्षिप्तता, सहजता और सुबोधता के गुण मौजूद हैं । काव्य संबंधी मान्यताओं की बोधगम्य व्याख्या प्रस्तुत की गई है । बाबू जी की सैद्धांतिक समीक्षा की दो पुस्तकों का हिंदी जगत में अच्छा सम्मान हुआ । विशेष रूप से अध्ययन-अध्यापन में सिद्धांत और अध्ययन तथा काव्य के रूप को महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में काफी ख्याति मिली ।

व्यावहारिक समीक्षा के कतिपय बिंदुओं की तलाश इनके प्रबंध प्रभाकर, हिंदी-काव्य-विमर्श, प्रसाद की कला और हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास के अंतर्गत की जा सकती है । व्यावहारिक आलोचना में इन्होंने प्रायः व्याख्यात्मक पद्धति का अवलंबन किया है । इनके विचार सुलझे और निर्णय कोमल होते हैं ।

"काव्य की संप्रेषणीयता और प्रभावान्विति को काव्यालोचन का मुख्य आधार मानकर ही उन्होंने कवि कल्पित व्यापार आदि के सामान्यीकरण पर विचार किया है ।" (बाबू स्मृतिग्रंथ-पृ.253) भाषा उनके लिए सही रूप में सार्थक संप्रेषण की माध्यम थी और इस रूप में ही वे उसका उपयोग भी कर रहे थे । सार्थक शब्द गढ़ने में वे अपनी सृजन शक्ति का प्रयोग भी कर रहे थे । लोकगीतों में जन चरित्र भाषा के प्रयोग के समर्थक थे ।

गुलाबराय की समीक्षा दृष्टि मानवतावाद, समन्वयवाद राष्ट्रीयता और कर्मवाद पर आधारित थी। वस्तुतः नैतिकता और समन्वय के बोझ से दबी इनकी समीक्षा से आधुनिक यथार्थवादी साहित्य के जटिल प्रसंगों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता । आज के भौतिक युग में जीवनमूल्यों की अहमियत खत्म होती जा रही है । पुराने मूल्यों के स्थान पर नए मूल्य निर्मित हो रहे हैं । व्यक्ति का जीवन जटिल होता जा रहा है ऐसे में साहित्य का दुरूह होना स्वाभाविक है । आज साहित्य के मूल्यांकन हेतु समीक्षा के नए मानदण्ड निर्मित हो रहे हैं । लेकिन यही पर यह भी सही है कि यथार्थ को सुंदर बनाए रखने के लिए नैतिकता की खाल ओढ़नी ही पड़ेगी । वर्तमान संदर्भों में बाबू गुलाबराय की समीक्षा दृष्टि पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है।

(पृ.सं. 40 से)

(मौखिक)

लिखावट के नमूने प्रश्नमाला के साथ 12-00

आसान परीक्षा पाठ्यक्रम - प्रवेशिका

कन्नड़- कन्नड़ भाषा बोधिनी-। 08-50

मराठी - मराठी भाषा बोधिनी-। (मुद्रण में)

राष्ट्रभाषा विशारद पूर्वार्द्ध

कन्नड़- कन्नड़ भाषा बोधिनी-।। 10-00

मराठी - मराठी भाषा बोधिनी-॥ 13-00

राष्ट्रभाषा प्रवीण पूर्वार्द्ध

कन्नड़- कन्नड़ भाषा बोधिनी-।।। 11-00

मराठी - मराठी भाषा बोधिनी-।।। (मुद्रण में)